एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

लौकी व कद्दू वर्गीय सब्जियों की जैविक उन्नत खेती

(*सत्य नारायण गुर्जर)
तकनीकी सहायक, कृषि विज्ञान केन्द्र, हिंडौन सिटी, करौली
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gurjarsatyanarayan84@gmail.com

लौकी की खेती के लिए गर्म और आद्र जलवायु की आवश्यकता होती है यह पाले को सहन करने में बिलकुल असमर्थ होती है लौकी की बुवाई गर्मी और वर्षा ऋतु में की जाती है अधिक वर्षा और बादल वाले दिन रोग व कीटों को बढ़ावा देते है ।

भूमि: इसको बिभिन्न प्रकार की भूमियों में उगाया जा सकता है किन्तु उचित जल धारण क्षमता वाली जीवांशयुक्त हलकी दोमट भूमि इसकी सफल खेती के लिए सर्वोत्तम मानी गई है वैसे उदासीन पी.एच मान वाली भूमि इसके लिए अच्छी रहती है नदियों के किनारे वाली भूमि भी इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है कुछ अम्लीय भूमि में इसकी खेती की जा सकती है पहली जुताई मिटटी पलटने वाले हल से करें उसके बाद 2–3 बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएँ ।

प्रजातियाँ : लौकी के फूलों की आकृति दो प्रकार की होती है यथा लम्बी और गोल आमतौर पर लम्बी और पतली लौकी उगाने के प्रचलन अधिक है इसकी प्रमुख किस्मो की चारित्रिक गुणों का उल्लेख नीचे किया गया है

पूसा समर प्रोलिफिक लौंग: इस किस्म के फल 40–50 से. मि. लम्बे होते है जो कच्ची अवस्था में 15–22 से.मि. के घेरे वाले होते है जो हलके रंग के होते है यह प्रति हे. 150 क्विंटल तक पैदावार देती है

संकर पूसा मेघदूत: इस किस्म के फल हरे, लम्बे , कोमल एवं आकर्षक होते है ग्रीष्म और बसंत दोनों ही ऋतुओं के बुवाई के लिए उपयुक्त किस्म है यह प्रति हे. 250 क्विंटल तक उपज देती है

हिसार सेलेक्शन लम्बी: इस किस्म के फल हरे, चिकने , कोमल , लम्बे और देखने में आकर्षक लगते है

पंजाब लम्बी –इस किस्म के फल लम्बे, हरे कोमल होते है यह वर्षा कालीन फसल के रूप में उगाने के लिए उपयुक्त किस्म है यह प्रति हे. 200 क्विंटल तक उपज देती है

पंजाब कोमल: यह मध्यम आकार के लम्बे फल वाली अंगूरी रंग की किस्म है इसके फल देर तक ताजे बने रहते है इसकी उपज 500 क्विंटल प्रति हे. तक प्राप्त होती है

गोल किस्मे: पूसा समर प्रोलिफिक राउंड, संकर पूसा मंजरी, हिसार सिलेक्शन गोल, पूसा सन्देश

नवीनतम किस्मे

कोयम्बूर 1: इस किस्म का विकास तमिलनाडू कृषि वि. वि. कोयम्बूर द्वारा किया गया है यह जून और दिसंबर में बोने के लिए उपयुक्त किस्म है यह किस्म दक्षिणी भारत में काफी लोकप्रिय हो गई है यह प्रति हे. 280 क्विंटल तक उपज दे देती है यह लवणीय क्षारीय और सीमांत मृदाओं मे उगाने के लिए है

अर्का बहार: यह खरीफ और जायद दोनों मौसमों में उगाने के लिए उपयुक्त किस्म है बीज बोने के 120 दिन बाद फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते है फल लम्बे कोमल और हरे रंग के होते है यह

प्रति हे. 40–50 टन पैदावार दे देती है 1984 में दक्षिण भारत में उगाने के लिए इसे रिलीज कर दिया गया है

पन्त संकर लौकी 1 (पी.बी.ओ.जी. 1), पूसा संकर 3

पी. बी. ओ. जी. 61, बी. जी. एल. सी. 21, नरेंद्र संकर लौकी 4

आजाद नूतन: इस किस्म के फल लम्बे , हलके हरे चिकने वजन में 1–1.5 किलो ग्राम के होते है यह दोनों मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है बोने के 55–70 दिन में फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते है

बोने का समय

ग्रीष्म कालीन फसल के लिए – जनवरी से मार्च

वर्षा कालीन फसल के लिए जून – जुलाई

पंक्ति से पंक्ति की दुरी 1.5 मीटर

पौध से पौध की दुरी 1 मीटर

बीज की मात्रा

जनवरी –मार्च वाली फसल के लिए 4–6 किलो ग्राम हे.

जून– जुलाई वाली फसल के लिए 3–4किलो ग्रा, हे.

बुवाई: नदियों के किनारे कछारी मिटटी में 1 मि. गहरी और 60 से. मि. चौड़ी नालियां बनाई जाती है खुदाई करते समय उपरी आधी बालू का एक और ढेर लगा लिया जाता है आधी बालू को खोदकर उसमे नालियों को लगभग 30 से. मि. तक भर देते है इन्ही नालियों में 1.5 मि. की दुरी पर छोटे–छोटे थाले बनाकर उनमे बीज बो देते है दो नालियों के मध्य 3 मीटर का फासला रखना चाहिए पौधों को पाले से बचाने के लिए उत्तर पश्चिमी दिशा में टट्टियाँ लगा देनी चाहिए

जैविक खाद: लौकी की अधिक पैदावार लेने के लिए उसमे जैविक खाद, कम्पोस्ट खाद की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए इसके लिए एक हे. भूमि में लगभग 35–40 क्विंटल गोबर की अच्छे तरीके सड़ी हुई खाद और आर्गनिक खाद 2 बैग भू–पावर वजन 50 किलो ग्राम , 2 बैग माइक्रो फर्टीसिटी कम्पोस्ट वजन 40 किलो ग्राम , 2 बैग माइको नीम वजन 20 किलो ग्राम , 2 बैग सुपर गोल्ड कैल्सिफर्ट वजन 10 किलो ग्राम , 2 बैग माइक्रो भू–पावर वजन 10 किलो ग्राम और 50 किलो अरंडी की खली इन सब खादों को अच्छी तरह मिलाकर खेत में बुवाई के पूर्व इस खाद को समान मात्रा में खेत में बिखेर लें और इसके बाद अच्छी तरह से खेत की जुताई करके खेत को तैयार करें और फिर बुवाई करें और जब फसल 20–25 दिन की हो जाए तो 2 बैग सुपर गोल्ड मैग्नीशियम वजन 1 किलो ग्राम और माइक्रो झाइम 500 मि.ली. को 400 लीटर पानी में मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर फसल में तर–बतर कर छिडकाव करें और हर 15–20दिन के अंतर से दूसरा व तीसरा छिडकाव करें

सिचाई: ग्रीष्म कालीन की फसल के लिए 4–5 दिन के अंतर से सिचाई की आवश्यकता होती है जबकि वर्षाकालीन फसल के लिए सिचाई की आवश्यकता वर्षा न होने पर पड़ती है ठण्ड में 10–15 दिन के अंतर पर सिचाई करनी चाहिए

खरपतवार नियंत्रण: लौकी की फसल के साथ अनेक खरपतवार उग आते है उनकी रोकथाम के लिए जनवरी – मार्च वाली फसल में 2–3 बार और जून–जुलाई वाली फसल मे 3–4 बार निराई करनी चाहिए

कीट नियंत्रण

फल की मक्खी: यह मक्खी फलों में प्रवेश कर जाती है और वहीँ पर अंडे देती है अण्डों से बाद में सुंडी निकलती है वे फल को वेकार कर देती है यह मक्खी विशेष रूप से खरीफ वाली फसल को हानी पहुंचाती

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह मिश्रण तैयार कर 250 मि. ली. प्रति पम्प के साथ खेत में तर–बतर कर छिडकाव करें

सफेद ग्रब: यह कीट कद्दू वर्गीय पौधों को काफी हानी पहुंचाता है यह भूमि के अन्दर रहता है और पौधों की जड़ों को खा जाता है जिसके करण पौधे सुख जाते है

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अछ्ही तरह से मिश्रण तैयार कर फसल में 250 मि. ली. प्रति पम्प के द्वारा तर–बतर कर छिडकाव करें

रोग नियंत्रण

चूर्णी फफूंदी: यह रोग ऐरीसाइकी सिकोरेसिएरम नामक फफूंदी के कारण होता है पत्तियों एवं तनों पर सफेद दरदरा और गोलाकार जाल सा दिखाई देता है जो बाद में आकार में बढ़ता जाता है और कत्थई रंग का हो जाता है पूरी पत्तियां पिली पड़कर सुख जाती है पौधों की बढ़वार रुक जाती है

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर 250 मि. ली. प्रति पम्प द्वारा खेत में तर–बतर कर छिडकाव करें

मृदु रोमिल फफूंदी: यह रोग स्यूडोपरोनोस्पोरा क्यूबेन्सिस नामक फफूंदी के कारण होता है रोगी पत्तियों की निचली सतह पर कोणाकार धब्बे बन जाते है जो ऊपर से पीले या लाल रंग के होते है

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौमूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर 250 मि.ली. प्रति पंप द्वारा फसल में तर–बतर कर छिडकाव करें

मोजैक: यह विषाणु के द्वारा होता है इससे पत्तियों की बढ़वार रुक जाती है और वे मुड़ जाती है फल छोटे बनते है उपज कम मिलती है यह रोग चौंपा द्वारा फैलता है

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौ मूत्र को माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर 250 मि.ली. प्रति पम्प द्वारा खेत में तर–बतर कर छिडकाव करें

एन्थ्रेकनोज: यह रोग कोलेटोट्राईकम स्पीसीज के कारण होता है इस रोग के कारण पत्तियों और फलों पर लाल काले धब्बे बन जाते है यह धब्बे आपस में मिल जाते है यह रोग बीज द्वारा फैलता है

रोकथाम: इसकी रोकथाम के लिए बीज को बोने से पूर्व गौमूत्र या कैरोसिन या नीम का तेल का साथ उपचारित कर बीज की बुवाई करें

तुड़ाई: फलों की तुड़ाई उनकी जातियों पर निर्भर करती है फलों को पूर्ण विकसित होने पर कोमल अवस्था में किसी तेज चाकू से पौधे से अलग करना चाहिए कठोर फलों से अच्छी सब्जी नहीं बनती है जिसके कारण उसका बाजार भाव भी कम मिलता है

उपज: यह प्रति हे. जून–जुलाई और जनवरी से मार्च वाली फसलों से 150–200 क्विंटल और 80–100 क्विंटल तक उपज मिल जाती है